



दक्षिण हरियाणा के इतिहास में राव तुलाराम और नसीबपुर

युद्ध : एक अध्ययन

Ravi Dutt, Research Scholar
Supervisor Dr Mohammad Shahnawaz

सार : 1857 की क्रांति के दौर में भारतीय शासकों और अंग्रेजों के बीच अनेक युद्ध लड़े गए। उन्में से नसीबपुर का युद्ध भी अपनी ऐतिहासिक प्रांसागिकता रखता है। यह युद्ध दक्षिण हरियाणा के वर्तमान जिला नारनौल के नसीबपुर में लडा गया। जिसमें रेवाडी रियासत के प्रमुख राव तुलाराम ने अग्रणी भूमिका अदा की थी। हालांकि युद्ध के अन्तिम क्षण में अंग्रेजों की ही जीत हुई। लेकिन राव तुलाराम की सेना अपनी वीरता, साहस और शौर्य का प्रदर्शन करते हुए युद्ध को अपने पक्ष में करने के लिए लगातार प्रयाशरत रही।

भारत के प्रथम गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी के काल से लगभग तय हो गया था कि अब वो दिन दूर नहीं जब सम्पूर्ण भारतीय भूमि, धर्म, राजनीति और आर्थिक संसाधनों पर अंग्रेजों का अधिकार हो जाएगा। जिसको अंग्रेजों ने 1857 की क्रांति तक अन्तिम परिणति तक पहुंचा दिया।

इसके लिए अंग्रेजों ने अनेक प्रकार के तौर तरीके अपनाने पडे। इन तौर तरीको के परिणामस्वरुप ही 1857 की क्रांति का जन्म हुआ। क्रांति में अंग्रेजी सेना और भारतीयों राजाओं की सेना के मध्य कई युद्ध लड़े गए। अंग्रेजी सेना भारतीय राजाओं की सेना को हराकर उस क्षेत्र को अपने अधीन कर लेती थी। अपनी इसी आश के साथ अंग्रेजी सेना रेवाडी को भी अपने अधीन करने के लिए रेवाडी की तरफ कूच किया था तभी अंग्रेजी सेना और रेवाडी नरेश राव तुलाराम की सेना के मध्य नसीबपुर का युद्ध लडा गया।

अंग्रेजी सरकार ने रेवाडी और रेवाडी की अधीन आस पास के इलाकों के विद्रोह का दमन करने की जिम्मेवारी बिग्रेडियर शावर्स की दी गई। शावर्स की सेना 05 अक्टूबर 1857 को



पटौदी क्षेत्र में पहुंची। उस समय पटौदी का क्षेत्र राव तुलाराम के अधीन था। 05 अक्टूबर को ही शावर्स की सेना और राव तुलाराम की सेना के मध्य पटौदी में हल्की झड़प हुई।¹

इस हल्की की झड़प में अंग्रेजी सेना राव तुलाराम की सेना पर भारी पड़ती नजर आई। इससे राव तुलाराम को अंग्रेजों की शक्ति का अहसास हो गया। वह समझ गया था कि अंग्रेजों के खिलाफ सीधी लड़ाई उनके लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकती है। उसी समय उन्होंने बिना वक्त गवाए अपने सभी क्रान्तिकारियों, सेनापतियों और आक्रमणकारियों से सभा करकर आगे की रणनीति के लिए गहन विचार विमर्श किया। सर्वसहमति से सभी ने यह फैसला लिया कि रामपुरा किले को छोड़कर किसी सुरक्षित स्थान से अंग्रेजों का मुकाबला किया जाए।²

अंग्रेज सेनापति शावर्स 06 अक्टूबर को पटौदी होते हुए रेवाडी के रामपुरा में पहुंचा और यहा पर अंग्रेजी सेना को किसी भी प्रकार का विरोध का सामना नहीं करना पड़ी परिणामस्वरूप विरोधरहित रामपुरा किले को कब्जे में ले लिया। रामपुरा किले में अंग्रेजी सेना को भारी मात्रा में अस्त्र शस्त्र प्राप्त हुए।³ शावर्स ने रामपुरा किले पर कब्जा करने के बाद अपना एक दूतमंडल संधि के लिए राव तुलाराम के पास भेजा लेकिन राव तुलाराम ने संधि प्रस्ताव को ठुकरा दिया।⁴ इससे अंग्रेजों के समझ में आ गया कि राव तुलाराम आसानी से हार मानने वाला नहीं है। उन्होंने रामपुरा किले को छोड़कर कानोंड की ओर कदम रखा। लेकिन इसका लाभ राव तुलाराम को मिला और उन्होंने पुनः रामपुरा किले को अपने कब्जे में कर लिया।⁵

1 हरियाणा में 1857 की क्रान्ति, पूर्वोद्धत, पेज न0 113

2 क्रान्ति दूत राव राजा तुलाराम, पूर्वोद्धत, पेज न0 57

3 वही, पेज न0 62

फाईल न0 32, हरियाणा राज्य अभिलेखागार

4 क्रान्ति दूत राव राजा तुलाराम, पूर्वोद्धत, पेज न0 62

5 वही



अब अंग्रेजी सेना को अपनी रणनीति बदलनी पडी। उन्होने राव तुलाराम पर सीधा आक्रमण ना करके रेवाडी रियासत के आसपास के गांवो को कब्जे में लेना आरम्भ कर दिया। इस कडी में झज्जर, फरुखनगर और बल्लभगढ के अधिकतर हिस्सों को अपने कब्जे में कर लिया गया। इस दौरान काफी क्षेत्रों में अंग्रेजों को क्रान्तिकारियों के विद्रोह का सामना करना पडा। लेकिन अंग्रेजो ने बिना किसी दया और रहम के प्रत्येक विद्रोह का सख्ती से दमन करते हुए क्रान्तिकारियों को फांसी दे दी जाती थी। झज्जर, फरुखनगर और बल्लभगढ के नवाब राजा नाहर सिंह को दिल्ली के चांदनी चौक पर फांसी दी गई।⁶

अब अंग्रेजों के लिए राव तुलाराम और उनके साथी क्रान्तिकारी शहजादा मुहम्मद हिसार, शेखावती राजपुत, मेवात के मेव सरदार और जनरल समद खॉ को ही गिरफ्तार करना बचा हुआ था। शुरुआती दौर में अंग्रेजी सेना इन क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार करने में विफल रहे।⁷ लेकिन अंग्रेज लगातार इन सभी की क्रान्तिकारियों की गतिविधियों पर पैनी नजर बनाए हुए थे। उन्होने बडी ही कूटनीति के साथ 10 नवम्बर 1857 को कर्नल जेरार्ड के नेतृत्व में उच्चस्तरीय अस्त्र शस्त्र और लगभग 1500 सैनिको के साथ एक बडा सैन्य दल को रेवाडी पर आक्रमण करने के लिए भेजा गया।⁸

राव तुलाराम जेरार्ड के सैन्य बल के पहुंचने से पहले ही रेवाडी को छोडकर नारनौल की ओर चले गए। इसके अलावा उनके मुख्य क्रान्तिकारियों में से एक राव किशन सिंह भी अपने सैन्य बल के साथ नारनौल पहुंचकर राव तुलाराम के सैन्य बल मे मिल गया। अपने प्राकृतिक

6 वही, पेज न0 63

7 एफ0 एस0 सी0 न0 145–153, 02 जुलाई 1857, भारतीय पुरातत्व अभिलेखागार

क्रान्ति दूत राव राजा तुलाराम, पूर्वोद्धत, पेज न0 62

8 वही, पेज न0 63

गुप्तचर विभाग के दस्तावेज, एन0 डब्ल्यु0 पी0 वोल011, पेज न0 272–73



कारणों से नारनौल क्रान्तिकारियों के लिए बहुत ही सुरक्षित जगह थी। कर्नल मालसेन के अनुसार नारनौल एक बहुत ही मजबूत जगह थी। यह लगभग 400फीट उंची एक पहाड़ी के नीचे की जगह थी। यह सामने से ढकी हुई थी जिसके कारण सेना को एक रक्षात्मक आवरण मिला हुआ था। यहां के मैदान समतल थे जिसे घुड़सवार सेना के अनुकूल माना जाता है।⁹

दूसरी तरफ जेरार्ड का सैन्य बल 14 नवम्बर 1857 को रेवाडी पहुंचा तो उसे रेवाडी में कुछ भी नहीं मिला जिसके कारण वह काफी परेशान हों गया क्योंकि जेरार्ड को अंग्रेजी सरकार की तरफ से आदेश दिया गया था कि राव तुलाराम को जीवित पकड़कर लाया जाए। लेकिन जेरार्ड को रेवाडी पहुंचने तक अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पाई। जिसके कारण उन्होंने अतिरिक्त सेना की मांग की ताकि काफी दूरी तक राव तुलाराम और उनके साथियों का पिछा किया जा सके।¹⁰ बहुत जल्दी पंजाब सैन्य दस्ता भी जेरार्ड की सेना में आ मिला। अब जेरार्ड ने अपने पूरे सैन्य दस्ते को 16 नवम्बर 1857 को नारनौल की तरफ कूच कर दिया।¹¹

उधर राव तुलाराम को जैसे ही यह पता चला कि जेरार्ड का बड़ा सैन्य दस्ता उन पर आक्रमण करने के लिए आ रहा है, वैसे ही उन्होंने आस पास के शासकों से सहायता मांगी लेकिन किसी से भी कोई सहायता प्राप्त नहीं हुई। कोई सहायता प्राप्त ना होने के कारण राव तुलाराम और उनके क्रान्तिकारी साथियों ने स्वयं ही अंग्रेजों पर आक्रमण करने का निर्णय लिया। जेरार्ड की सेना नारनौल से कुछ पहले नसीबपुर में आराम करने के लिए ठहरी और उनके सैनिक भोजन करने लग गए। सैनिक भोजन कर ही रहे थे, उनके सामने कुछ दूरी पर धूल के बादल से दिखाई देने लगे। यह धूल के बादल राव राजा की सेना थी। 17 नवम्बर 1857 को दिन में 12 बजे राव राजा की सेना और अंग्रेजी सेना के मध्य नसीबपुर का ऐतिहासिक युद्ध आरम्भ हो गया।¹²

9 ए हिस्टी आफ म्युटिनि 1857–58, की एंड मालसेन, वोल्युम 11, पेज न0 75

10 क्रान्ति दूत राव राजा तुलाराम, पूर्वोद्धत, पेज न0 64

11 वही

12 क्रान्ति दूत राव राजा तुलाराम, पूर्वोद्धत, पेज न0 65



युद्ध आरम्भ होते ही भारतीय सेना अंग्रेजी सेना पर भूखें शेर की तरह टूट पडी जिसके कारण अंग्रेजी सेना प्रथम आक्रमण का कोई बहुत बड़ा प्रतिशोध नहीं कर पाई।¹³ जिसके कारण भारतीय सेना अंग्रेजी सेना पर भारी पड़ती नजर आई। इसी बीच भारतीय सेना के महान कमांडर राव किशन सिंह ने घोड़े पर सवार होकर अपनी धारदार तलवार से अंग्रेज सेनापति जेर्ग की गर्दन कलम कर दी। इससे अंग्रेजी सेना भयभीत हो गई।¹⁴ लेकिन कुछ समय बाद अंग्रेजी कारबायनियर्स और गाइडस ने कुछ साहस दिखाते हुए भारतीय सेना को रोककर अंग्रेजी सेना को सम्भलने का मौका दे दिया। लेकिन अंग्रेज अपनी स्थिति को सम्भाल नहीं पाए।¹⁵

कुछ समय बाद राव तुलाराम का बहादुर कमांडर राव किशन सिंह वीरगति को प्राप्त हो गए। इससे भारतीय सेना के हौंसले टंडे पड़ गए लेकिन सेना ने अपनी हार नहीं मानी। अब राव राजा स्वयं राव किशन सिंह की शहादत का बदला लेने के लिए युद्ध मैदान में कुद पड़े। राव राजा के हाथ में तलवार को देखकर अंग्रेजी सेना में पुनः भगदड़ मच गई।¹⁶

राव तुलाराम के मोर्चा सम्भालने के बाद भारतीय सेना बहुत बहादुरी के साथ लड़ती रही। इससे अंग्रेज सेना के नए कमांडर कोलफील्ड को महसूस हो गया था कि भारतीय सेना पर नियंत्रण करना बहुत मुश्किल होगा। उन्होंने नाभा, पटियाला और गौरखा सैनिकों को भी युद्ध में शामिल कर लिया।¹⁷ कमांडर के द्वारा तोपखाने को भयंकर आग उगलने का आदेश दिया गया। जिससे आग के गोले भारतीय सेना के मध्य में गिरने लगे। परिणामस्वरूप भारतीय सेना दो भागों में विभाजित हो गई। इससे सेना की सम्मिलित शक्ति टूट गई और अंग्रेज सेना ने भारतीय सेना

13 वही

हरियाणा में 1857 की क्रांति, पूर्वोद्धत, पेज न0 118

14 क्रांति दूत राव राजा तुलाराम, पूर्वोद्धत, पेज न0 65

15 वही

16 क्रांति दूत राव राजा तुलाराम, पूर्वोद्धत, पेज न0 66

17 वही



को चारों ओर से घेर लिया। इसी बीच भारतीय सेना के महान सेनापति राव रामलाल, मुहम्मद आजम और जनरल समद खा का बेटा वीरगति को प्राप्त हो गया।¹⁸

इतनी भारी क्षति के बाद राव सेना का पांव उखडने लग गए लेकिन राव राजा और जनरल समद खा ने सेना का हौसले बढाने का भरपूर प्रयाश किया। लेकिन हथियारों की कमी बाधा बन गई। अंग्रेजों ने भारतीय सेना के अधिकतर सैनिको को मौत के घाट उतार दिया। इसी दौरान राव तुलाराम भी घायल हो गए तभी समद खां के आग्रह और भविष्य में पुनः युद्ध की आशा से राव तुलाराम अंग्रेजों से बन्दी बनने की बजाय रात्रि के अंधेरे का लाभ उठाकर युद्धभूमि छोडकर चले गए। नसीबपुर युद्ध अंग्रेजो के पक्ष में चला गया।¹⁹

18 वही

19 वही